

અહમ દીની અરબાક

તાલીફ : સમાહત અશ્-શૈખ
અબ્દુલ અઝીઝ બિન અબ્દુલ્લાહ બિન બાઝ
રહમતુલ્લાહ



શાએકદર્

ઈસ્લામિક ઈન્ફોર્મેશન સેન્ટર-ભૂજ

અહમ દીની અસ્બાક

(ગુજરાતી લિપિયાંતર)

તાલીફ : સમાહત અશ્-શૈખ
અબ્દુલ અઝીઝ બિન અબ્દુલ્લાહ બિન બાઝ
રહમતુલ્લાહ

ઉર્દૂ તરજુમા : અઝીઝ અહમદ કમરુઝ્-ઝમાં
ગુજરાતી લિપિયાંતર : મુહમ્મદ જમાલ પટીવાલા

— શાએકદર્દ —



ઈસ્લામિક ઈન્ફર્મેશન સેન્ટર-ભૂજ

નૂરાની હોટલ કે પાસ, ડાંડા બજાર, ભૂજ (કચ્છ)

મોબાઈલ : (+91) 8401786172

Aham Deeni Asbaq (Gujarati Lipiyantar)
Aham Deeni Asbaq (Urdu)
By : Samahat As-Shaikh Abdul Aziz Bin Abdullah Bin Baaz

—: Publisher :—
ISLAMIC INFORMATION CENTRE-BHUJ
Near Hotel Noorani, Danda Bazar, BHUJ (Kutch)
Mobile : 8401786172

પ્રથમ આવૃત્તિ
પ્રત : ૧૦૦૦
માર્ચ, ૨૦૧૫

પૃષ્ઠ : ૩૨

મુદ્રક : યુનિક ઓફસેટ, તાવડીપુરા, અહમદાબાદ.

ફેહરિસ્ત

નં.સુ.	મૌઝુઆત	સફહ નંબર
૧.	મુકદ્દમા :	૦૦
૨.	પહલા સબક : સૂર: ફાતિહા ઓર છોટી સૂરતોં કા હિફ્ઝ.	૦૦
૩.	દૂસરા સબક : અરકાને ઈસ્લામ કે બયાન મેં.	૦૦
૪.	તીસરા સબક : અરકાને ઈમાન કે બયાન મેં.	૦૦
૫.	ચૌથા સબક : તૌહીદ ઓર શિર્ક કે અકસામ.	૦૦
૬.	પાંચવા સબક : એહસાન.	૦૦
૭.	છઠ્ઠા સબક : નમાઝ કી શરાઈત કે બારે મેં.	૦૦
૮.	સાતવાં સબક : અરકાને નમાઝ.	૦૦
૯.	આઠવાં સબક : નમાઝ કે વાજિબાત.	૦૦
૧૦.	નવવાં સબક : તશહુદ કે બયાન મેં.	૦૦
૧૧.	દસવાં સબક : નમાઝ કી સુન્નતેં.	૦૦
૧૨.	ગ્યારહવાં સબક : નમાઝ કો બાતિલ કર દેનેવાલી ચીઝોં કે બારે મેં.	૦૦
૧૩.	બારહવાં સબક : વુઝૂ કી શરાઈત.	૦૦
૧૪.	તેરહવાં સબક : વુઝૂ કે ફરાઈઝ.	૦૦
૧૫.	ચૌદહવાં સબક : નવાકુઝે વુઝૂ કે બયાન મેં.	૦૦
૧૬.	પંદરહવાં સબક : તમામ મુસલમાનોં કા શરઈ અખ્લાક સે આરાસતા હોના.	૦૦
૧૭.	સોલહવાં સબક : ઈસ્લામી આદાબ કી પાબંદી.	૦૦
૧૮.	સત્તરહવાં સબક : શિર્ક ઓર ગુનાહોં સે બચના.	૦૦
૧૯.	અઠારહવાં સબક : મૈયત કી તજહીઝ વ તકફીન ઓર નમાઝે જનાઝા.	૦૦

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

(शुरु अल्लाह के नाम से, जो बेईतहां मेहरबान और रहमवाला है.)

मुकद्दमा

الحمد لله رب العالمين، والعاقبة للمتقين، ووصلى الله وسلم على عبده و

رسوله نبينا محمد وعلى آله وأصحابه أجمعين، أما بعد!

अलहुम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन, वल्-आकिबतु लिल मुत्तकीन, व सल्लल्लाहु व सल्लम अला अहुदुल्लू व रसूलुहु नबिय्युन मुहम्मद व अला आलिही व अस्हाबिही अजमईन, अम्मा बाअूद.

तमाम तारीफ़ उस अल्लाह के लिये हैं, जो सारे जहां का परवरदिगार है और अंजामे भैर मुत्तकीयों के लिये है, और दुरुद नाजिल हो उसके बंदे और उसके रसूल, हमारे नबी मुहम्मद ﷺ पर और उनकी अवलाह पर और उनके तमाम सहाबा-अ-किराम ﷺ पर.

अम्मा बाअूद... ये मुप्तसर बातें दीने ईस्लाम के उन उमूर से मुता'ल्लिक हैं, जिनका तमाम लोगों को ईल्म होना ज़रूरी है. ईसका नाम मैंने 'अल-दुरुस अल-महमतुल आम्मतुल उम्मल' रखा, यानी उम्मत के आम लोगों के लिये ज़रूरी अस्बाक. अल्लाह त्आला से दुरआ करता हुं कि ईसके जरिये तमाम मुसलमानों को नइअ पहुंचाये, और ईसे मेरी तरफ़ से कुबूल कर ले, बेशक वो बडा ही सफी और मेहरबान है.

— अहुदुल अजीज़ बिन अहुदुल्लाह बिन बाज़

आम मुसलमानों के लिये अहम अस्बाक

पहला सબक

सूर: इतिहा और छोटी सूरतों का डिङ्गल.

सूर: इतिहा और छोटी सूरतों, मसलन् सूर: जिलजाल ता सूर: अन्-नास में से जो मुमकिन हो उन सूरतों की सही तलफुङ्गल और तजवीह के साथ ता'लीम देना, याद करना और उनके मा'नी की तशरीह करके समझाना.

दूसरा सबक

अरकाने इस्लाम के बयान में.

इस्लाम के पांच अरकान के बयान में है और उनमें सबसे पहला और अहम रुङ्गन ﷺ (ला-इलाह इल्लाह, मुहम्मदुर्-रसूलुल्लाह) की गवाही है. इसके मा'नी की तशरीह और ﷻ (ला-इलाह इल्लाह) की शराहत के साथ इसका मा'नी ये है कि — ﷻ (ला-इलाह) से उन तमाम चीजों की नई मकसूद है, जिनकी अल्लाह त्आला के इलावा इबाहत की जाती है. ﷻ (इल्लाह) से इस बात का इस्बात कि इबाहत सिर्फ अल्लाह त्आला ही के लिये है और उसका कोई शरीक नहीं.

ﷻ के शराहत ये हैं :

१. ऐसा इल्म जो जिहालत के मनाई हो.
२. ऐसा यकीन जो शक के मनाई हो.
३. ऐसा इप्वास जो शिर्क के मनाई हो.
४. ऐसी सय्याह जो जूठ के मनाई हो.

૫. એસી મુહબ્બત જો બુગ્ઝ કે મનાફી હો.
૬. એસી તા'બેદારી જો નાફરમાની કે મનાફી હો.
૭. એસી ઈતાઅત જો ઈન્કાર કે મનાફી હો.
૮. ઉન તમામ ચીઝોં કા ઈન્કાર જિનકી અલ્લાહ ત્આલા કે ઈલાવા ઈબાદત કી જાતી હૈ.

યે તમામ ચીઝોં ઈન દો શે'રો મેં જમા કર દી ગઈ હૈ —

علم، يقين وأخلاص وصدق مع
 محبة وانقياد والقبول لها
 وزيد ثمنها الكفران منك بما
 سوى الا.اله من الا.شياء قد ألها

ઈસ્મ ઓર યકીન ઓર ઈખ્લાસ ઓર સચ્ચાઈ ઓર ઈસકે સાથ-સાથ મુહબ્બત વ ઈતાઅત ઓર ઈસકી મકબૂલિયત, ઓર આઠવીં બાત યે કિ તુમ અલ્લાહ કે ઈલાવા કિસી ભી ચીઝ કી ઈબાદત કા ઈન્કાર કર દો.

ઓર, મુહમ્મદ ﷺ કી રિસાલત કી ગવાહી કા મતલબ યે હૈ કિ આપ ﷺ કી તસ્દીક કરના ઉન તમામ ચીઝોં કે બારે મેં જિનકી આપ ﷺ ને ખબર દી હૈ, ઓર જિન ચીઝોં કા હુકમ દિયા હૈ ઉનમેં આપ ﷺ કી ઈતાઅત કરના, ઓર ઉન ચીઝોં સે બાઝ રહના જિનસે આપ ﷺ ને મનઅ ફરમાયા હૈ, ઓર અલ્લાહ કી ઈસી તરહ ઈબાદત કરના જૈસે અલ્લાહ ઓર ઉસકે રસૂલ ને હુકમ દિયા હૈ.

ફિર ઈસ્લામ કે બાકી અરકાન કી વઝાહત કી જાએ જો યે હૈ :

નમાઝ કાઈમ કરના, ઝકાત દેના, રમઝાન કે રોઝે રખના, ઓર બશર્ત ઈસ્તિતાઅત બૈતુલ્લાહ કા હજજ કરના.

तीसरा सभक अरकाने ईमान के बयान में.

अरकाने ईमान छे छे —

ईमान लाना अल्लाह पर, उसके इरिशतों पर, उसकी किताबों पर, उसके रसूलों पर, यव्मे आभिरत पर और ईस पर के अच्छी या बूरी तकदीर अल्लाह ही की तरफ से हैं.

चौथा सभक तौहीद और शिर्क के ईकसाम के बयान में.

तौहीद की तीन किस्में हैं —

१. तौहीदे रुबूबियत.
 २. तौहीदे उलूहियत.
 ३. तौहीदे अस्मा व सिफ़ात.
१. तौहीदे रुबूबियत ये छे कि ईस बात पर ईमान लाना कि अल्लाह तूआला ही हर चीज़ का पैदा करनेवाला छे, और उसी के तसरुफ़ में सारी चीज़ें हैं और ईसमें उसका कोई शरीक नहीं छे.
२. तौहीदे उलूहियत ये छे कि ईस बात पर ईमान लाना कि अल्लाह तूआला ही मा'बूदे बर-हक़ छे, और उसमें उसका कोई शरीक नहीं छे. यही **الله لا اله الا الله** (ला-ईलाह ईल्लल्लाह) के मा'नी छे. अल्लाह तूआला ही मा'बूदे बर-हक़ छे, ईसका मतलब ये छे कि नमाज़, रोज़ा और दीगर तमाम ईबादतें सिर्फ़ अल्लाह तूआला के लिये अंजाम देना सुइरी छे, किसी दूसरे के लिये किसी तरह भी ज़रूज़ नहीं छे.

3. तौहीदे अस्मा व सिफात ये है कि अल्लाह त्आला के वल तमाम अस्मा व सिफात जो कुरआन-करीम और सहीह हदीसों में वारिद है उन पर ईमान लाया जाये. एन्हें सिर्फ अल्लाह के लिये शायाने-शान साबित किया जाये, जिससे न तो तेहरीफ लाजिम हो, न वल सिफत मुअत्तल हो, न किसी मज्लूक से तश्बिहा पाई जाये, न ईसका कोई भाका बने. अल्लाह त्आला के कौल पर अमल करते हुअे —

قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۝ اللَّهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ ۝ وَلَمْ يُولَدْ ۝ وَلَمْ يَكُن لَّهُ كُفُوًا أَحَدٌ ۝

“कुल हुवल्लाहु अहद. अल्लाहुस्-समद, लम् यलिद् व-लम् यूलद. व-लम् यकुंल्लहु कुहुवन् अहद.” (सूर: एफ्लास)

“कहो, अल्लाह अेक है. अल्लाह सभसे बेनियाज है (और सभ उसके मुहताज है). न उसकी कोई अवलाद है और न वल किसी की अवलाद, और उसका कोई हमसर नहीं है.”

नीज, अल्लाह त्आला का एरशाद है —

لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ ۝ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۝

“लईस क-मिस्लिहि शईउन्, व-हुवस्-समीउल् बसीर.”

(सूर: शूरा, आ. ११)

(कोई चीज उसके मिस्ल नहीं है, और वल सुननेवाला और देबनेवाला है.)

बा'ज अेहले एल्म ने तौहीद की सिर्फ दो किस्में बयान की है, और तौहीदे अस्मा-व-सिफात को तौहीदे रुबूबियत में दाखिल कर दिया है, और ईसमें कोई हरज नहीं, ईस लिये कि हर दो तकसीम में मकसूद वाजेह है.

शिक्र की तीन किसमें हैं :

शिक्र अकबर, शिक्र असगर, शिक्र षकी.

१. शिक्र अकबर वह है जिसकी वजह से अमले सालेह आयेअ हो जाता है, और बंदा हमेशा के लिये जहन्नम का मुस्तहिक हो जाता है, जिस शप्स की मौत इसी पर हुई हो. अल्लाह त्आला का ईरशाह है —

﴿وَلَوْ أَشْرَكُوا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ﴾

“वलव अशूरकू ल-हबित अन्हुम् मा-कानू यअ्मलून.”

(सूर: अन्आम, आ. ८८)

(अगर कहीं इन लोगों ने शिक्र किया होता तो इनका सब किया-कराया गारत हो जाता.)

इसी तरह अल्लाह त्आला का ईरशाह है —

﴿مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِينَ أَنْ يَعْمُرُوا مَسْجِدَ اللَّهِ شَاهِدِينَ عَلَيْهِ أَنْفُسِهِمْ
بِالْكَفْرِ ۗ أُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ ۗ وَفِي النَّارِهِمْ خَالِدُونَ﴾

“मा-कान विल्-मुशूरिकीन अंय्यअ्मुरू मसाजिदल्लाहि शाहिदीन अला अन्हुसिहिम् बिल्-कुइरि, उलाईक हबितत् अअ्मालुहुम् व-ईन्नारि हुम् षालिदून.” (सूर: अत्-तौबा, आ. १७)

(मुशूरिकीन का यह काम नहीं है कि वह अल्लाह की मस्जिदों के मुजावर षादिम बनें, दरालाल-ये-कि अपने उपर वह षुद कुइ की शहाहत दे रहे हैं. उनके तो सारे आ'माल आयेअ हो गये और जहन्नम में इन्हें हमेशा रहना है.)

जो शप्स इस हाल में मर गया उसकी बकिस नहीं होगी और जन्नत उस पर हराम है, जैसा कि अल्लाह त्आला का कौल है —

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَهُ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ

“ઇન્નલ્લાહ લા યગ્ફિરુ અંયુશરક બિહિ વ-યગ્ફિરુ મા દૂન ઝાલિક લિમંયશાઅ.” (સૂર: નિસા, આ. ૪૮)

(અલ્લાહ ત્આલા શિર્ક કો માફ નહીં કરતા, ઇસકે મા સિવા (દૂસરે જિસ કદર ગુનાહ હૈ) વહ જિસે ચાહતા હૈ માફ કર દેતા હૈ.)

ઇસી તરહ અલ્લાહ ત્આલા ફરમાતા હૈ —

إِنَّهُ مَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ
وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ۝

“ઇન્નહુ મંયુશરિક્ બિલ્લાહિ ફકદ્ હરમલ્લાહુ અલઇહિલ્ જન્નત વ મઅ્વાહુન્નાર, વ-મા લિઝ્-ઝાલિમીન મિન્ અન્સાર.”

(સૂર: માઈદા, આ. ૭૨)

(જિસને અલ્લાહ કે સાથ કિસીકો શરીક ઠહરાયા ઉસ પર અલ્લાહ ત્આલા ને જન્નત કો હરામ કર દી, ઓર ઉસકા ઠિકાના જહન્નમ હૈ, ઓર ઐસે ઝાલિમોં કા કોઈ મદદગાર નહીં હૈ.)

ઇસી તરહ મુરદોં ઓર બૂતોં કો પુકારના ઓર ઉનસે મદદ માંગના ઓર ફરિયાદ કરના, ઉનકે લિયે નઝર-નિયાઝ કરના ઓર ઉનકે નામ પર જાનવર ઝુબ્હ કરના ભી ‘શિર્કે અકબર’ મેં શામિલ હૈ.

૨. શિર્કે અસગર વહ હૈ જિસે કુરઆન યા હદીસ કે નુસૂસ મેં શિર્ક કહા ગયા હૈ, મગર વહ શિર્કે અકબર કે કબીલ સે નહીં હૈ; જૈસે બા’ઝ કામોં મેં રિયા વ નુમૂદ, અલ્લાહ ત્આલા કે ઇલાવા કિસી કી કસમ ખાના, યા યે કહના કિ જો અલ્લાહ ચાહે ઓર ફલાં ચાહે. નબી કરીમ ﷺ કા ઈરશાદ હૈ —

أخوف ما أخذ عليكم الشرك الأصغر، فسئل عنه، فقال: الرياء.

“مैं तुम पर जिस चीज़ से सभसे ज़्यादा डरता हूँ वह शिर्क असगर है. आप ﷺ से इसके बारे में सवाल किया गया, तो आप ﷺ ने इरमाया : वह रिया है.”

इसे इमाम अहमद, तबरानी और बयहकी ने महुमूद बिन लुबैद अन्सारी رضي الله عنه से ब-सनद जय्यिद रिवायत किया है, और तबरानी ने इसको मुतअदिद काबिले कुबूल सनदों से महुमूद बिन लुबैद से और इन्हों ने राइअ बिन जुदैज से और इन्हों ने नबी करीम ﷺ से रिवायत किया है. नबी करीम ﷺ का इरशाद है —

من حلف بشيء دون الله فقد أشرك.

“जिसने अल्लाह तूआला के सिवा किसी चीज़ की कसम षाई तो उसने शिर्क किया.”

इसको इमाम अहमद ने सहीह सनद से हज़रत उमर बिन षताब رضي الله عنه से रिवायत किया है.

और, इसीको अबू दाउद व तिरमिज़ीने सहीह सनद से हज़रत इब्ने उमर رضي الله عنه से रिवायत किया है. वह नबी करीम ﷺ से बयान करते हैं कि आप ﷺ ने इरशाद इरमाया —

من حلف بغير الله فقد كفر أو أشرك.

“जिसने अल्लाह तूआला के सिवा किसी की कसम षाई तो उसने कुफ़ किया या शिर्क किया.”

और, नबी करीम ﷺ का इरमान है —

لا تقولوا ما شاء الله وشاء فلان، ولكن قولوا ما شاء الله ثم شاء فلان.

“यह न कહो जो अल्लाह त्आला याहे और हुलां याहे, बल्कि यह कहो जो अल्लाह त्आला याहे फिर हुलां याहे.”

ईसे अबू दाउद ने सहीह सनद से हजरत हुजैफा बिन यमान رضي الله عنه से रिवायत किया है.

शिके असगर न तो ईरतिदाद का सभब बनता है और न हमेशा जहन्नम में रहने का सभब बनता है, अलबत्ता यह क्माले तौहीद के मनाई है जो के वाजिब है.

3. **शिके ખફી** : यह शिक की तीसरी किस्म है. ईसकी दलील नबी करीम صلوات الله وسلامه عليه का कौल है —



ألا أخبركم بما أخوف عليكم عندي من المسيح الدجال؟
قالوا: بلى يا رسول الله.

قال: الشرك الخفي، يقوم الرجل فيصلي فيزين صلاته لما يرى من نظر الرجل إليه.

“क्या मैं तुम्हें वह चीज न बताऊँ जिसके बारे में मैं तुम पर मसीह दज्जल से भी ज़्यादा डरता हूँ? सहाबा किराम رضي الله عنهم ने अर्ज किया : क्यूं नहीं, अय अल्लाह के रसूल صلوات الله وسلامه عليه ! आप صلوات الله وسلامه عليه ने इरमाया : शिके ખફી, वह यह है कि जब आदमी नमाज़ के लिये ખડा हो तो अपनी नमाज़ बहुत अच्छी तरह से अदा करे, ईस लिये कि लोग उसकी तरफ़ देਖ रहे हूँ.”

ईमाम अहमद ने ईसे अपनी मुस्नद में अबू सईद ખुदरी رضي الله عنه से रिवायत किया है.

यह भी हो सकता है कि शिक की सिर्फ़ दो किस्में करार दी जाये - शिके अकबर और शिके असगर, और शिके ખફी ईन दोनों में मुश्तरक है. शिके अकबर ખફी की मिसाल मुनाफ़िकों का शिक है, ईसलिये कि

વહ લોગ અપને બાતિલ અકાઈદ કો છિપાએ રખતે થે ઓર રિયાકારી સે ઓર અપની જાન કે ડર સે ઈસ્લામ કો ઝાહિર કરતે થે. શિર્કે ખફી અસગર કી મિસાલ રિયાકારી હૈ, જૈસા કિ મહમૂદ બિન લુબૈદ અન્સારી  કી ગુઝરી હુઈ હદીસ મેં ઓર અબૂ સઈદ ખુદરી  કી હદીસ મેં ઈસકા બયાન આ ચુકા હૈ. અલ્લાહ ત્આલા હી બેહતરીન તૌફીક દેનેવાલા હૈ.

પાંચવા સબક : એહસાન ક્યા હૈ ?

એહસાન યહ હૈ કિ તુમ અલ્લાહ કી ઈબાદત ઈસ તરહ કરો ગોયા તુમ ઉસકો દેખ રહે હો, અગર યહ મુમકિન ન હો તો કમ-અઝ-કમ યહ જાનો કિ વહ તુમકો દેખ રહા હૈ.

છટ્ટા સબક : નમાઝ કી શરાઈત કે બયાન મેં.

નમાઝ કી શરાઈત નૌ હેં :

(૧) ઈસ્લામ. (૨) અક્લ. (૩) શઝિર. (૪) બા-તહારત હોના. (૫) નિજાસત કા ઝાઈલ કરના. (૬) શર્મગાહ કા છિપાના. (૭) વક્ત કા દાખિલ હોના. (૮) કિબ્લે કી તરફ રુખ કરના. (૯) નિયત કરના.

સાતવાં સબક : અરકાને નમાઝ કે બયાન મેં.

નમાઝ કે ચૌદહ અરકાન હેં.

(૧) કુદરત હો તો ખડે હોના. (૨) તકબીરે તહરીમા. (૩) સૂરઃ ફાતિહા પઢના. (૪) રુકૂઅ. (૫) રુકૂઅ કે બાદ અચ્છી તરહ ખડે હોના. (૬) સાતોં અઝ્ઝા પર સજદહ કરના. (૭) સજદે સે પૂરી તરહ ઉઠના. (૮) દોનોં સજદોં કે દરમિયાન બૈઠના. (૯) તમામ અરકાન કો ઈત્મિનાન

સે અદા કરના. (૧૦) તમામ અરકાન કો તરતીબ સે અદા કરના. (૧૧) આખરી તશહહુદ. (૧૨) આખરી રકા'ત મેં તશહહુદ કે લિયે બેઠના. (૧૩) કાઈદએ આખિર મેં નબી કરીમ ﷺ પર દરૂદ ભેજના. (૧૪) દાયે-બાયેં સલામ ફેરના.

આઠવાં સબક : નમાઝ કે વાજિબાત કે બયાન મેં.

નમાઝ કે વાજિબાત આઠ હેં :

(૧) તકબીરે તહરીમા કે ઈલાવા બકિયા સારી તકબીરાત. (૨) ઈમામ ઓર મુન્ફરિદ કે લિયે 'સમિઅલ્લાહુ લિમન્ હમીદહ' કહના. (૩) 'રબ્બના વ લકલ્ હમ્દ' કહના, ખ્વાહ ઈમામ હો યા મુક્તદી યા તન્હા નમાઝ પઢ રહા હો. (૪) રુકૂઅ મેં 'સુબ્હાન રબ્બીયલ અઝીમ' કહના. (૫) સજદે મેં 'સુબ્હાન રબ્બીયલ અઝ્લા' કહના. (૬) દોનોં સજદોં કે દરમિયાન 'રબ્બિગ્-ફિરલી' કહના. (૭) ત્રીન યા ચાર રકા'તવાલી નમાઝ મેં પહલા તશહહુદ. (૮) તશહહુદ અવ્વલ કે લિયે બેઠના.

નવાં સબક : તશહહુદ કે બયાન મેં.

તશહહુદ (અત્તહિયાત) યે હે -

أَتَحِيَّاتُ لِلَّهِ وَاصْلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ، السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ
وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ، السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ،
أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔

“અત્તહિયાતુ લિલ્લાહિ વસ્-સલવાતુ વત્-તય્યિબાતુ, અસ્સલામુ અલઈક અય્યુહન્-નબિય્યુ વ રહમતુલ્લાહિ વ બરકાતુહ, અસ્સલામુ અલઈના વ-અલા ઈબાદિલ્લાહિસ્-સાલિહીન, અશહદુ અલ્ લા-ઈલાહ ઈલ્લલ્લાહુ વ અશહદુ અન્ન મુહમ્મદન્ અબ્દુહુ વ રસૂલુહ.”

(तमाम कौली व बदनी और माली ँबादतें अल्लाह तूआला के लिये हें (या तमाम अदब-व-ता'जीम के कलमात, हमारी नमाजें और तमाम सदकात अल्लाह के लिये हें), सलाम हो आप पर अय नबी और अल्लाह की रहमत और बरकतें हों; सलामती हो हम पर और अल्लाह के सभ बंदो पर. में गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई ँबादत के लाईक नहीं, और में गवाही देता हूं कि मुहम्मद ﷺ उसके बंदे और रसूल है.)

इर नबी ﷺ पर दइद पढ़ें, वह यह है —

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ
إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ. اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا
بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ.

“अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिन् व-अला आलि मुहम्मदिन्,
कमा सल्लि अला ँबराहीम व-अला आलि ँबराहीम ँन्नक
हमीदुम्-मज्जिद. अल्लाहुम्म बारिक अला मुहम्मदिन् व-अला आलि
मुहम्मदिन् कमा बारकत अला ँबराहीम व अला आलि ँबराहीम,
ँन्नक हमीदुम्-मज्जिद.”

(अय अल्लाह, तू मुहम्मद ﷺ और आले मुहम्मद पर रहमत
नाजिल इरमा, जिस तरह तूने ँबराहीम ﷺ और उनकी आल पर रहमत
नाजिल इरमाई, तू हम्द व सताईश के लाईक और बुजूर्गीवाला है; और
बरकत नाजिल इरमा मुहम्मद ﷺ और आले मुहम्मद पर जिस तरह तूने
ँबराहीम ﷺ और उनकी आल पर बरकत नाजिल इरमाई, बिलाशुबा
तू हम्द व सताईश के लाईक और बुजूर्गीवाला है.)

इर आपरी काईदह में कअ्र के अजाब और दोज्ज के अजाब और

મૌત-વ-હયાત કે ફિત્નો, ઔર મસીહ દજજાલ કે ફિત્ને સે અલ્લાહ કી પનાહ તલબ કરે, ફિર જો દુઆ ચાહે પઢે, ખુસૂસન્ માસૂરહ દુઆએ, મસલન્ —

اللَّهُمَّ أَعِنِّي عَلَى ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ،
اللَّهُمَّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي ظُلْمًا كَثِيرًا، وَلَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ،
فَغْفِرْ لِي مَغْفِرَةً مِنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِي، إِنَّكَ أَنْتَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ.

“અલ્લાહુમ્મ, અઈન્ની અલા ઝિક્રિક વ શુક્રિક વ હુસ્નિ ઈબાદતિક, અલ્લાહુમ્મ ઈન્ની ઝલમ્તુ નફ્સી ઝુલ્મન્ કસીરંવ્—વ લા યગ્ફિરુઝ્-ઝુનૂબ ઈલ્લા અન્ત ફગ્ફિર-લી મગ્ફિરતમ્—મિન્ ઈન્દિક વ રહમની, ઈન્નક અન્તલ ગફૂરુ-રહીમ.”

(અય અલ્લાહ, અપના ઝિક્ર કરને ઔર અપના શુક્ર અદા કરને ઔર અચ્છી તરહ ઈબાદત કરને મેં મેરી મદદ ફરમા. અય અલ્લાહ, મેંને અપને આપ પર બહુત ઝુલ્મ ક્રિયા ઔર તેરે ઈલાવા કોઈ ગુનાહોં કો બક્ષ નહીં સકતા, તૂ મેરે ગુનાહોં કો મહઝ અપને ફઝ્લ-વ-કરમ સે બક્ષ દે ઔર મેરે સાથ રહમ કા મુઆમલા ફરમા, બિલાશુબા તૂ બડા બક્ષનેવાલા ઔર રહમ કરનેવાલા હૈ.)

રહા તશહહુદે અવ્વલ, તો ઈસમેં શહાદતૈન કે બાદ ઝુહૂર, અસૂર, મગરિબ ઔર ઈશા કી તીસરી રકા'ત કે લિયે ખડે હો જાએ, ઔર અગર કોઈ શખ્સ નબી કરીમ ﷺ પર દરૂદ પઢે તો યે બેહતર હૈ, ઉમૂમ અહાદીસ કી બિના પર, ફિર વહ તીસરી રકા'ત કે લિયે ખડા હો જાએ.

દસવાં સબક : નમાઝ કી સુન્નાતોં કે બયાન મેં.

નમાઝ કી બા'ઝ સુન્નાતેં યે હૈં :

૧. દુઆ ઈસ્તિઝ્તાહ — سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ (સુબ્હાનકલ્લાહુમ્મ...) પઢના.

२. छालते क्याम में दाओं हाथ की हथेली को बाओं हाथ पर सीने के उपर रखे, और रुकूअ के बाद उठे तो इसी तरह करे.
३. तकबीरे तेहरीमा और रुकूअ से कबल और रुकूअ के बाद और (तीन या चार रका'तवाली नमाज़ में) काँदअे उला से तीसरी रका'त के लिये उठते हुअे इस तरह दोनों हाथ मूँडे या कान तक उठाना के उँगलियां आपस में मिली हुँछें.
४. रुकूअ और सजदे में अेक से काँद मरतबा तस्बीह *سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ, سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى* (सुब्दान रब्बियल अज़ीम, सुब्दान रब्बियल आ'ला) पठना.
५. रुकूअ से उठने के बाद *رَبِّكَ الْحَمْدُ* (रब्बना व-लकल् हम्द) के साथ मज़ीद मासूरा हुआओं का र्छाफ़ा करना, और दोनों सजदों के दरमियान अेकसे ज़्यादा मरतबा *رَبِّيَ اغْفِرْ لِي* (रब्बीग्-फ़िरली) पठना.
६. रुकूअ में सर को पीठ के बराबर करना.
७. सजदे में दोनों बाजुओं को पेहलु से और पेट को रानुं से और रानुं को पिंडलीयों से अलाधदा रखना.
८. सजदे में दोनों हाथों को जमीन से उठाअे रखना.
९. काँदअे उला में और दोनों सजदों के दरमियान जब बैठे तो बाओं पैर को बिछाअें और इस पर बैठे और दाहने पैर को षडा रखे.
१०. तीन और चार रका'तवाली नमाज़ छे तो काँदअे अफ़ीरा में तव्वरुक करना, या'नी अपने सुरीन पर बैठना, अपने बाओं पैर को दाहने पैर के नीचे कर लेना, और दाहने को षडा रखना.
११. पेहले और दूसरे काँदअे में अत्तलिय्यात पढते हुअे अफ़ीर तक शलाहत की उँगली से र्छारा करना, और हुआ के वक्त उसको हिलाना.

૧૨. કાઈદએ ઊલા મેં મુહમ્મદ ﷺ, આપ કી આલ-ઔલાદ ઔર આલે ઈબરાહીમ કે લિયે રહમત ઔર બરકત કી દુઆ કરના.
૧૩. કાઈદએ અખીરા મેં દુઆ કરના.
૧૪. ફજર, જુમ્આ, ઈદુલ ફિત્ર, બકર ઈદ, ઈસ્તસ્કા કી નમાઝોં મેં ઔર મગરિબ ઔર ઈશા કી પેહલી દોનોં રકા'તો મેં જહરી કિરાઅત કરના.
૧૫. ઝુહર, અસૂર મેં ઔર મગરિબ કી તીસરી રકા'ત મેં ઔર ઈશા કી આખરી દોનોં રકા'તો મેં સિરી કિરાઅત કરના.
૧૬. સૂરએ ફાતિહા કે સાથ કોઈ દૂસરી સૂરત પઢના.

નમાઝ કી મઝકૂરા સુન્નતોં કે ઈલાવા બકિયા સુન્નતોં કા ભી ખયાલ રખના ચાહિયે, મસલન્ - નમાઝી કા રુકૂઅ સે ઉઠને કે બાદ رَبِّكَ الْحَمْدُ (રબ્બના વ લકલ્ હમ્દ) સે ઝ્યાદા પઢના. યે ઈમામ, મુક્તદી ઔર તન્હા નમાઝ પઢનેવાલે સબ કે લિયે સુન્નત હૈ; ઔર ઈસી તરહ રુકૂઅ કરતે વક્ત દોનોં હાથોં કો ઘુટને પર ઈસ તરહ રખના કિ ઉંગલિયાં ફૈલી હુઈ હોં.

ગ્યારહવાં સબક

નમાઝ કો બાતિલ કર દેનેવાલી ચીઝોં કે બયાન મેં.

નમાઝ કો બાતિલ કર દેનેવાલે ઉમૂર આઠ હેં -

૧. જાન-બૂઝકર (અમદન્) બાત કરના, ભૂલકર યા નાવાકફિયત કી બિના પર બાત કર લી તો ઈસસે નમાઝ બાતિલ નહીં હોગી.
૨. હંસના.
૩. ખાના.
૪. પીના.
૫. સતર કા ખુલ જાના.

६. किष्वा रुप से बहुत ज्यादा उट जाना.
७. नमाज में मुसलसल गैरजुदरी हरकत करना.
८. तहारत व पाकी का ખत्म हो जाना.

બારહવાં સબક : વુઝૂ કી શરાઈત કે બયાન મેં.

વુઝૂ કી દસ શરાઈત હેં —

૧. મુસલમાન હોના.
૨. અક્લ કા હોના.
૩. શરિર કા હોના.
૪. નિયત કરના.
૫. વુઝૂ કે ઈખ્તિતામ તક નિયત કા બાકી રખના.
૬. વુઝૂ કો વાજિબ કર દેનેવાલી ચીઝોં કા ના હોના.
૭. વુઝૂ સે પેહલે પાની યા ઢેલે સે ઈસ્તિન્જા કરના.
૮. પાની કા પાક ઔર ઉસકા મુબાહ હોના.
૯. ઉન ચીઝોં કો દૂર કરના જો પાની કો ખાલ તક પહોંચને સે રોકતી હોં.
૧૦. નમાઝ કા વક્ત હોના, ઉસકે લિયે જિસકા વુઝૂ બરકરાર ન રહતા હો.

તેરહવાં સબક : વુઝૂ કે ફરાઈઝ કે બયાન મેં.

વુઝૂ કે ફરાઈઝ છે હેં —

૧. ચેહરે કા ધોના; કુલ્લી કરના ઔર નાક મેં પાની ડાલના ઈસી મેં શામિલ હેં.
૨. દોનોં હાથ કુહનિયોં સમેત ધોના.
૩. તમામ સર ઔર કાનોં કા મસહ કરના.

૪. દોનો પૈરોં કો ટખનોં સમેત ધોના.

૫. તરતીબ કે સાથ વુઝૂ કરના.

૬. વુઝૂ કે આ'ઝા કા યકે બાદ દીગરે - બિલા ફસ્લ - ધોના.

મુસ્તહબ યહ હૈ કિ ચેહરા, દોનોં હાથ ઓર દોનોં પૈરોં કો તીન-તીન બાર ધોયા જાએ. ઈસી તરહ તીન બાર કુલ્લી કરના ઓર નાક મેં તીન બાર પાની ડાલના ભી મુસ્તહબ હૈ. અગર-ચે ફર્જ સિર્ફ એક બાર કા ધોના હૈ. સહીહ અહાદીસ કે મુતાબિક સર કે મસહ કી તકરાર મુસ્તહબ નહીં.

ચોદહવાં સબક : નવાકુઝે વુઝૂ કે બયાન મેં.

વુઝૂ કો તોડ દેનેવાલી ચીઝેં છે હેં -

૧. પેશાબ યા પાખાને કે રાસ્તે સે કિસી ચીઝ કા નિકલના.

૨. જિસ્મ સે નજિસ ફાહિશ ચીઝ કા નિકલના.

૩. નીંદ યા કિસી વજહ સે હોશ-વ-હવાસ કા ખત્મ હો જાના.

૪. અગલી યા પિછલી શર્મગાહ કો બગૈર કિસી હાઈલ (પરદા) કે છૂના.

૫. ઊંટ કા ગોશત ખાના.

૬. મુર્તદ હો જાના. (અલ્લાહ ત્આલા હમેં ઓર સારે મુસલમાનોં કો ઈસસે મહફૂઝ રખે.)

એક અહમ તંબીહા :

મૈયત કો ગુસ્લ દેને સે સહીહ કૌલ કે મુતાબિક વુઝૂ નહીં તૂટતા, ઓર યહી અક્સર એહલે ઈલ્મ કા મસ્લક હૈ, ક્યૂં કિ ઈસકે ખિલાફ કોઈ દલીલ નહીં હૈ. લેકિન અગર ગુસ્લ દેનેવાલે કા હાથ મૈયત કી શર્મગાહ પર બગૈર કિસી હાઈલ કે પડ ગયા તો ઈસ પર વુઝૂ વાજિબ હો જાએગા. વૈસે ભી ગુસ્લ દેનેવાલે પર વાજિબ હૈ કિ વહ મૈયત કી શર્મગાહ બગૈર કિસી હાઈલ કે ના છૂએ.

ઈસી તરહ ઔરત (બીવી) કો છૂને સે વુઝૂ કતઅન્ નહીં તૂટતા, ખ્વાહ યે છૂના શહવત સે હો યા બગૈર શહવત કે. યહી ઝ્યાદા સહીહ કૌલ હૈ, ઈલ્લા યે કિ કોઈ ચીઝ ખારિજ હો જાએ. ઈસ લિયે કિ નબી કરીમ ﷺ ને અપની બા'ઝ બીવીયોં કા બોસા લિયા ઔર દોબારા વુઝૂ કિએ બગૈર નમાઝ પઢી.

સૂર: અન્-નિસા (આ. ૪૩) ઔર અલ-માઈદા (આ. ૬) કી આયતોં
 أَوْ لَسْتُمْ مِنَ النِّسَاءِ યા તુમ ને ઔરતોં કો છૂ લિયા હો - સે મુરાદ ઉલ્મા કે મુતાબિક જિમાઅ યા'ની મુબાશિરત હૈ, ઔર યહી અબ્દુલ્લાહ ઈબ્ને અબ્બાસ رضي الله عنه ઔર સલ્ફ-વ-ખલ્ફ કી એક જમાઅત કા ભી કૌલ હૈ - والله ولي التوفيق.

પંદરહવાં સબક

તમામ મુસલમાનોં કા શરઈ અખ્લાક સે આરાસ્તા હોના.

તમામ મુસલમાનોં કા શરઈ અખ્લાક સે આરાસ્તા હોના : મસલન્ - સચ્ચાઈ, અમાનતદારી, પાકદામની, શર્મ-વ-હયા, બહાદુરી, સખાવત, વફાદારી, અલ્લાહ ત્આલા કી હરામકર્દા તમામ ચીઝોં સે દૂરી, પડોસી કે સાથ અચ્છા બરતાવ, હસ્બે ઈસ્તિતાઅત ઝુરૂરતમંદો કી ઈમ્દાદ વ ઈઆનત, ઔર ઈસકે ઈલાવા વહ તમામ અખ્લાકે હુસ્ના, જિનકા કુર્આન-મજીદ ઔર અહાદીસે સહીહા મેં ઝિક હૈ ઔર ઉનકી તલકીન કી ગઈ હૈ.

સોલહવાં સબક

ઈસ્લામી આદાબ કી પાબંદી.

ઈસ્લામી આદાબ કી પાબંદી : મસલન્ - સલામ કરના, ખંદાપેશાની સે પેશ આના, દાહને હાથ સે ખાના-પીના, કામ શુરૂ કરતે વક્ત بسم الله (બિસ્મિલ્લાહ) પઢના, કામ ખત્મ કરને પર الحمد لله (અલહમ્દુલિલ્લાહ)

कहना, छोँक आओ तो الحمد لله (अललहमुदुलिल्लाह) कहना, अगर छोँकनेवाला الحمد لله (अललहमुदुलिल्लाह) कहे तो इसके जवाब में الله يرحمك (यरलमुकल्लाह) कहना, मरीज की अयादत करना, नमाजे जनाजा पढने और दफन करने में शरीक होना, मस्जिद और घर में दाखिल होते वक्त और इससे निकलते वक्त और सफर के वक्त, वालदैन और रिश्तेदारों, पड़ोसियों और बड़ों और छोटों के साथ मुआमला करने में, शादी और नौमवलूद की मुबारकबाद देने में, मुसीबत के वक्त ता'जियत करने में और इसके इलावा कपडे और जूते पहनने और उतारने में इस्लामी आदाब की रियायत करना.

सत्तरहवां सभक : शिर्क और गुनाहों से बचना.

शिर्क और गुनाहों से बचना और बचाना, इन्हीं में सात हलाक कर देनेवाले गुनाह हैं, जो यह है —

१. अल्लाह तूआला के साथ शरीक ठहराना.
२. जादू करना या कराना.
३. किसी को नाहक कत्ल करना.
४. सूद खाना.
५. यतीम का माल खाना.
६. जंग से भागना.
७. मोमिन व पाकदामन और बोलीबाली औरतों पर जूटी तोहमत लगाना.

इसी तरह गुनाहों में यह भी शामिल हैं : वालदैन की नाइरमानी करना, रिश्तादारों से ता'ल्लुकात खत्म करना, जूटी गवाही देना, जूटी कसम खाना, पड़ोसियों को तकलीफ देना, लोगों की जान-व-माल और

ઈજ્જત-વ-આબરૂ પર ઝ્યાદતી કરના, નશાવર ચીઝ કા ઈસ્તેમાલ કરના, જૂઆ ખેલના, ઔર ઈસકે ઈલાવા ગીબત વ યુગલી ઔર દીગર ઉમૂર જિનસે અલ્લાહ ત્આલા ઔર ઉસકે રસૂલ ﷺ ને મનઅ ફરમાયા હૈ.

અઠારહવાં સબક

મૈયત કી તજહીઝ-વ-તકફીન ઔર નમાઝે જનાઝા

જિસકી તફસીલ દર્જે ઝેલ હૈં —

૧. જબ મરીઝ પર મૌત કે આસાર જાહિર હો જાએ તો ઉસે ﷻ (લા-ઈલાહ ઈલ્લાહ) કી તલ્કીન કરની ચાહિએ. નબી કરીમ ﷺ કા ઈરશાદ હૈ —

لَقِّنُوا مَوْتًا كَمَا لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ

યા'ની “અપને મૌતી (મરનેવાલોં) કો ﷻ (લા-ઈલાહ ઈલ્લાહ) કી તલ્કીન કરો.”

ઈસે ઈમામ મુસ્લિમ ને અપની સહીહ મેં રિવાયત કિયા હૈ. ઈસ હદીસ મેં ‘મૌતી’ સે મુરાદ વહ લોગ હૈં, જિન પર મૌત કે આસાર જાહિર હો જાએ.

૨. જબ કિસી કી મૌત કા યકીન હો જાએ તો ઉસકી આંખે બંદ કર દી જાએ ઔર દાઢી બાંધ દી જાએ, જૈસા કિ સુન્નત સે સાબિત હૈ.
૩. મુસલમાન મૈયત કો ગુસ્લ દેના વાજિબ હૈ. અલબત્તા, જો જંગ મેં શહીદ હુઆ હો ઉસકો ના ગુસ્લ દિયા જાએગા ઔર ના ઉસકી નમાઝે જનાઝા પઢી જાએગી, બલકિ ઉસે ઉસી લિબાસ મેં દફન કર દિયા જાએગા, ઈસ લિયે કિ નબી કરીમ ﷺ ને જંગે ઉહુદ કે શોહદા કો ના ગુસ્લ દિયા ઔર ના ઉન પર નમાઝે જનાઝા પઢી.

૪. મૈયત કો ગુસ્લ દેને કા તરીકા યહ હૈ કિ ઉસકી શર્મગાહ કો ઢાંક દિયા જાએ, મૈયત કો થોડા ઉઠાયા જાએ ઓર ઉસકા પેટ આહિસ્તા સે દબાયા જાએ, ફિર ગુસ્લ દેનેવાલા કપડે કા ટુકડા યા ઉસ જૈસી ચીઝ કો અપને હાથ પર લપેટ લે ઓર ઉસસે ઉસે સાફ કરે, ફિર ઉસે નમાઝ કે વુઝૂ કી તરહ વુઝૂ કરાએ, ફિર ઉસકા સર ઓર દાઢી બૈરી કે પત્તોવાલે પાની સે યા ઉસ જૈસી ચીઝ સે ધોએ, ફિર ઉસકા દાયાં પહલુ ઓર ફિર બાયાં પહલુ ધોએ, ઈસી તરહ ઉસકો દૂસરી બાર ઓર તીસરી બાર ગુસ્લ દે, હર મરતબા અપને હાથ કો ઉસકે પેટ પર ફેરે, અગર કોઈ ચીઝ પેટ સે નિકલે તો ઉસે ધો દે, ફિર ઉસ જગહ કો રૂઈ યા કિસી ચીઝ સે બંદ કર દે, અગર ના રૂકે તો ગરમ મિટ્ટી યા જદીદ તિબ્બી સામાન મસલન, ટેપ વગૈરહ સે બંદ કર દે.

મૈયત કો દોબારા વુઝૂ કરાએ, અગર તીન બાર મેં સફાઈ ના હો સકે તો પાંચ બાર યા સાત બાર ગુસ્લ દે. ફિર ઉસે કિસી કપડે સે સુખા દિયા જાએ ઓર ઉસકે બગલોં ઓર સજદોં કી જગહોં પર ખૂશ્બુ લગા દી જાએ, ઓર અગર ઉસકે પૂરે જિસ્મ મેં ખૂશ્બૂ લગા દી જાએ તો બેહતર હૈ. ઉસકે કફન કો ખૂશ્બુ સે ધૂની દી જાએ, અગર ઉસકી મૂંછ ઓર નાખૂન બડે હોં તો કાટ દિયા જાએ, ઓર અગર છોડ દિયા ગયા તો ભી કોઈ હર્જ નહીં હૈ, ઓર બાલ મેં કંગી ના કી જાએ, બગલ ઓર નાફ કે બાલ ના કાટે જાએ ઓર ના ખત્ના કિયા જાએ, ઈસ લિયે કિ ઉસકી કોઈ દલીલ નહીં હૈ, ઓર ઓરત કે બાલ કી તીન ચોટિયાં બના દી જાએ, ફિર ઉનકો પીછે લટકા દિયા જાએ.

૫. મૈયત કી તકફીન કા તરીકા : અફઝલ યહ હૈ કિ મૈયત કો તીન સફેદ કપડોં મેં કફન દિયા જાએ, જો કમીસ ઓર અમામા ના હોં, મૈયત

કો ઈસકે અંદર લપેટ દિયા જાએ, જિસ તરહ નબી કરીમ ﷺ કે સાથ કિયા ગયા, ઓર અગર કમીસ, તેહબંદ ઓર ચાદર મેં કફન દિયા જાએ તો ભી કોઈ હર્જ નહીં હૈ. ઓરત કો પાંચ કપડોં મેં કફન દિયા જાએ - કમીસ, તેહબંદ, દુપટ્ટા ઓર દો ચાદરેં, ઓર નાબાલિગ બચ્ચે કો એક સે તીન તક કફન દિયા જાએ, ઓર છોટી બચ્ચી કો એક કમીસ ઓર દો ચાદર મેં કફન દિયા જાએ.

વૈસે કફન મેં સબ કે લિયે વાજિબ સિર્ફ એક કપડા હૈ, જો મૈયત કો અચ્છી તરહ સે ઢક દે. અગર મૈયત હાલતે એહરામ મેં હો તો ઉસકો બૈરી કે પાની સે ગુસ્લ દિયા જાએ ઓર ઉસકે તેહબંદ ઓર ચાદર મેં કફન દિયા જાએ. ઈસકે ઈલાવા ભી કફન દિયા જા સકતા હૈ. ઉસકે સર ઓર ચેહરે કો ના ઢકા જાએ ઓર ના ખૂશ્બુ લગાઈ જાએ, ઈસ લિયે કિ કિયામત કે દિન વહ તલ્બિયા કહતે હુએ ઉઠેગા, જૈસા કિ રસૂલુલ્લાહ ﷺ સે સહીહ હદીસ મેં મરવી હૈ. અગર મહરમ ઓરત હો તો વહ દીગર ઓરતોં હી કી તરહ કફનાઈ જાએગી. લેકિન ના ઉસકો ખૂશ્બુ લગાઈ જાએ ઓર ના ઉસકા ચેહરા નકાબ સે ઓર ના ઉસકા હાથ દસ્તાને સે છિપાયા જાએગા. લેકિન ઉસકા ચેહરા ઓર ઉસકે દોનોં હાથ ઉસકે કફન સે ઢાંક દિયે જાએંગે, જૈસા કિ ઓરત કી તક્ફીન કે બયાન મેં ગુઝર ચુકા હૈ.

૬. મર્દ કો ગુસ્લ દેને ઓર ઉસ પર નમાઝે જનાઝા પઢને ઓર ઉસે દફન કરને કા સબસે ઝ્યાદા હક્ક ઉસ શખ્સ કો હૈ જિસકે બારે મેં ઉસને વસિયત કી હો; ફિર બાપ, ફિર દાદા, ફિર ઉસકે લડકે, ફિર દાધયાલી રિશ્તેદારોં મેં જો ઝ્યાદા કરીબી હો.

ઓરત કો ગુસ્લ દેને કી સબસે ઝ્યાદા હક્કદાર વહ ઓરત હૈ જિસ

કે બારે મેં ઉસને વસિયત કી હો, ફિર ઉસકી માં, ફિર ઉસકી દાદી, ફિર રિશ્તેદાર ઔરતોં મેં સે જો સબસે ઝ્યાદા કરીબ હો.

મિયાં-બીવી મેં સે કોઈ ભી એક દૂસરે કો ગુસ્લ દે સકતા હૈ, ઈસ લિયે કિ હઝરત અબૂબક رضي الله عنه કો ઉનકી બીવી ને ગુસ્લ દિયા થા, ઔર હઝરત અલી رضي الله عنه ને અપની બીવી હઝરત ફાતિમા رضي الله عنها કો ગુસ્લ દિયા થા.

૭. નમાઝે જનાઝા પઢને કા તરીકા યહ હૈ કિ ચાર તકબીરેં કહી જાએ, પહલી તકબીર કે બાદ સૂર: ફાતિહા પઢી જાએ ઔર અગર ઉસકે સાથ કોઈ છોટી સૂરત યા એક-દો આયતેં પઢ લે તો બેહતર હૈ, જૈસા કિ હઝરત ઈબને અબ્બાસ رضي الله عنه સે સહીહ હદીસ મેં મરવી હૈ. ફિર દૂસરી તકબીર કહે ઔર નબી કરીમ صلى الله عليه وسلم પર દરૂદ પઢે, જિસ તરહ નમાઝ કે અંદર તશહહુદ મેં દરૂદ પઢતે હેં, ફિર તીસરી તકબીર કહે ઔર યહ પઢિયે —

૧. اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا، وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا، وَصَغِيرِنَا وَكَبِيرِنَا،
وَذَكَرِنَا وَأُنْثَانَا، اللَّهُمَّ مَنْ أَحْيَيْتَهُ مِنَّا فَأَحْيِهِ عَلَى الْإِسْلَامِ، وَمَنْ
تَوَفَّيْتَهُ مِنَّا فَتَوَفَّهُ عَلَى الْإِيمَانِ. اللَّهُمَّ لَا تَحْرِمْنَا أَجْرَهُ وَلَا تُضِلَّنَا بَعْدَهُ.
૨. اللَّهُمَّ اغْفِرْ لَهُ وَارْحَمْهُ، وَعَافِهِ وَاعْفُ عَنَّهُ، وَأَكْرِمْ نُزُلَهُ، وَوَسِّعْ
مَدْخَلَهُ، وَاعْسَلْهُ بِالْمَاءِ وَالثَّلْجِ وَالْبَرَدِ، وَنَقِّهِ مِنَ الْخَطَايَا كَمَا
نَقَّيْتَ الثَّوْبَ الْأَبْيَضَ مِنَ الدَّنَسِ، وَأَبْدِلْهُ دَارًا خَيْرًا مِنْ دَارِهِ،
وَأَهْلًا خَيْرًا مِنْ أَهْلِهِ، وَزَوْجًا خَيْرًا مِنْ زَوْجِهِ، وَأَدْخِلْهُ الْجَنَّةَ،
وَأَعِدْهُ مِنْ عَذَابِ الْقُبْرِ وَمِنْ عَذَابِ النَّارِ.

“अल्लाहुम्मगुफ़िर लि उय्यिना व मय्यितिना, व शाहिदिना व गाईबिना,
व सगीरिना व कबीरिना, व ज़क़रिना व उन्साना. अल्लाहुम्म मन् अह्ययतहु
मिन्ना इ-अहयिहि अलल् इस्लाम, व-मन् तवइइयतहु मिन्ना इतवइइहु अलल्
ईमान. अल्लाहुम्म ला तहरिमना अज़रहु व-ला तुज़िल्लना बअदह्.”

“अल्लाहुम्म-गुफ़िर लहु व-रहमहु, व-आइहि वाअहु अन्दु, व
अकरिम् नुजुलहु, व वस्सिअ् मद्भलहु, व-गुसिल्लहु बिल माई वस्-सल्लि
वल्-बरह, व नक्किहि मिनल्-भताया कमा नक्कय्तस्-सव्व-ल् अब्यज
मिनद्-दनसि, व अब्दिल्लहु दारन् भईरन् मिन् दारिहि, व अहलन् भईरन्
मिन अहलिहि, व ज़व्जन् भईरन् मिन् ज़व्जिहि, व अद्भिल्लहु-ल् जन्नत,
व अ-ईजहु मिन् अज़ाबिल् कअ्रि व-मिन् अज़ाबिन्नार.”

(अय अल्लाह ! हमारे जिन्दों को और मुर्दों को, छाज़िर को और
गाईब को, छोटों को और बड़ों को, मर्दों को और औरतों को बक्ष दे. अय
अल्लाह ! हम में से जिसे तू जिंदा रखे उसे इस्लाम पर जिंदा रख और
जिसे वफ़ात दे उसे ईमान पर वफ़ात दे. अय अल्लाह ! हमें ईसके अज़ में
शामिल इरमा और ईसके बाद हमें गुमराही से बचा.)

(अय अल्लाह ! ईस मैयत को बक्ष दे, ईस पर रहम इरमा, ईसे
आइयत में रख और ईसे माइ कर दे, ईसके ठिकाने को बाईज़ुत बना,
ईसके दाबिल होने की जगह को कुशादा कर, और ईसे पानी, बई और
ओलों से धो दे और ईसे गुनाहों और भताओं से औसा पाक-साइ कर दे
जैसे सईद कपडा मैलकुयैल से साइ किया जाता है, और ईसे ईसके घर से
बेहतर घर अता इरमा, और ईसकी बीवी से बेहतर बीवी अता इरमा,
ईसे जन्नत में दाबिल कर, और ईसे कअ्र के अज़ाब से और दोज़भ के
अज़ाब से पनाह में रख.)

ફિર યૌથી તકબીર કહે ઔર દાએ જાનિબ એક સલામ ફેરે, મુસ્તહબ યહ હૈ કિ હર તકબીર કે સાથ રફઅ-યદૈન કરે. અગર મૈયત ઔરત હો તો اللهم اغفر لها (અલ્લાહુમ્મ-ગ્ફિરલહા) કહે, યા'ની મુનિસ કા સીગા ઈસ્તિમાલ કરે. અગર જનાઝે દો હોં તો اللهم اغفر لها (અલ્લાહુમ્મ-ગ્ફિરલહુમા) કહે, યા'ની તસનિયહ કા સીગા ઈસ્તિમાલ કરે. અગર જનાઝે દો સે ઝ્યાદા હોં તો اللهم اغفر لهم (અલ્લાહુમ્મ-ગ્ફિરલહુમ) કહે, યા'ની જમઅ કા સીગા ઈસ્તિમાલ કરે, ઔર અગર બચ્ચે કા જનાઝા હો તો મગફિરત કી દુઆ કે બજાએ યહ કહે —

اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ فَرْطًا وَذُخْرًا لِوَالِدَيْهِ وَشَفِيعًا مُجَابًا.
 اللَّهُمَّ ثَقِّلْ بِهِ مَوَازِينَهِمَا، وَأَعِزِّمْ بِهِ أَجْوَرَهُمَا، وَأَحِقِّهِ
 بِصَاحِبِ سَلْفِ الْمُؤْمِنِينَ، وَقِهِ بِرَحْمَتِكَ عَذَابَ الْجَحِيمِ.

“અલ્લાહુમ્મ-જઅલહુ ફરતંવ્ વ ઝુખરન્, લિ-વાલિદઇહિ વ શફીઅમ્-મુજાબા, અલ્લાહુમ્મ સક્કિલ્ બિહિ મવાઝિનહુમા, વઅઝ્ઝિમ્ બિહિ ઉજૂરહુમા, વ અહ્લિકહુ બિસાલિહિ સલફિલ્ મુઅ્મિનીન, વકિહિ બિરહમતિક અઝાબિલ્ જહીમ.”

(અય અલ્લાહ ! ઈસે ઈસકે વાલદૈન કે લિયે અવ્વલ દસ્તા વ ઝખીરએ આબિરત ઔર ઔસા સિફારિશી બના દે જિસકી સિફારિશ કુબૂલ કી જાએ. અય અલ્લાહ ! ઈસકે ઝરિયે ઈન દોનોં કે આ'માલે ખૈર કા પલ્લા ભારી કર દે, ઔર ઈસકે ઝરિયે ઈન દોનોં કો બડા અજ્જ અતા ફરમા, ઔર ઈસે નેક મોમિનોં સે મિલા દે ઔર ઈસે અપની રહમત સે જહન્નમ કે અઝાબ સે બચા.)

સુન્નત યહ હૈ કિ ઈમામ મદ્દ કે સર કે મુકાબિલ ઔર ઔરત કી કમર કે મુકાબિલ મેં ખડા હો, ઔર અગર એક સાથ કઈ જનાઝે જમઅ હો

જાએ તો મદ્દ કો ઈમામ કે કરીબ ઓર ઓરત કો કિબ્લે કી તરફ રખા જાએ, ઓર અગર ઉનમેં બચ્ચે ભી હોં તો બચ્ચા ઓરત સે પેહલે, ફિર ઓરત કો, ફિર બચ્ચી કો રખા જાએ. બચ્ચે કા સર મદ્દ કે સર કે મુકાબિલ હો ઓર ઓરત કી કમર મદ્દ કે સર કે મુકાબિલ હો. ઈસી તરહ બચ્ચી કા સર ઓરત કે સર કે મુકાબિલ હો, ઓર ઉસકી કમર મદ્દ કે સર કે મુકાબિલ હો. નમાઝે જનાઝા અદા કરનેવાલે તમામ લોગ ઈમામ કે પીછે ખડે હોં, અગર કોઈ ઈમામ કે પીછે જગહ ન પાએ તો ઈમામ કે દાએં તરફ ખડા હો જાએ.

૮. મૈયત કે દફન કરને કા તરીકા : બેહતર યહ હૈ કિ આદમી કી કમર કે બરાબર કબ્ર ગહરી કી જાએ ઓર કિબ્લે કી તરફ ઈસમેં લહદ (બગલી) ખોદી જાએ. મૈયત કો કબ્ર મેં ઈસકે દાએં પેહલુ પર રખા જાએ, ઓર કફન કી ગિરહેં ખોલ દી જાએ. ઉસકો નિકાલા ના જાએ, બલ્કિ ઈસી તરહ છોડ દિયા જાએ. મૈયત કે ચેહરે કો ખોલા ના જાએ, ચાહે મદ્દ હો યા ઓરત. ફિર ઉસે કચ્ચી ઈંટોં સે બંદ કર દિયા જાએ ઓર ઈસ પર ગીલી મિટ્ટી લગા દી જાએ, તાકિ અપની જગહ જમ જાએ, ઓર મિટ્ટી સે બચાવ હો, ઓર અગર કચ્ચી ઈંટ મુયસ્સર ના હો તો તખ્તી યા પત્થર યા લકડી લગા દી જાએ, તાકિ મિટ્ટી ગિરને સે મહફૂઝ રહે. ફિર કબ્ર પર મિટ્ટી ડાલી જાએ. ઉસ વક્ત યહ કહના મુસ્તહબ હૈ — بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلَىٰ مِلَّتِ رَسُوْلِ اللّٰهِ (બિસ્મિલ્લાહ વ અલા મિલ્લતિ રસૂલુલ્લાહ). કબ્ર એક બાલશત કે બરાબર ઊંચી કી જાએ, અગર કંકરિયાં મુયસ્સર હોં તો ઉસ પર ડાલ દી જાએ ઓર પાની છિડક દિયા જાએ.

દફન કરનેવાલોં કો ચાહિયે કિ કબ્ર કે પાસ ખડે હોં ઓર મૈયત કે લિયે દુઆ કરેં, ઈસ લિયે કિ નબી કરીમ ﷺ મૈયત કો દફન કરને સે જબ ફારિગ હોતે તો ઉસકે પાસ ખડે હોતે ઓર કહતે :

استغفروا الأخيكم واسئلوا له التثبيت فإنه الآن يسئل.

“अपने भाई के लिये मगफिरत की दुआ करो और उसके लिये साबित कदमी याहो, इस लिये कि अब उससे सवाल होगा.”

८. जिस शप्स ने नमाजे जनाजा नहीं पढी है, उसके लिये जाँझ है कि तदफ़ीन के बाद नमाज पढ ले, इस लिये कि नबी करीम ﷺ ने ऐसा किया है, लेकिन ऐसा करना अक मलिने के अंदर हो; अगर ऐसा अक मलिने से मुदत तजवुज कर चुकी हो तो नमाजे जनाजा कब्र पर पढना जाँझ नहीं, इस लिये कि नबी करीम ﷺ से साबित नहीं है कि आपने मैयत के दफ़न करने के अक मलिने के बाद किसी कब्र पर नमाज पढी हो.

१०. मैयत के घरवालों के लिये जाँझ नहीं कि वह लोगों के लिये ખाना तैयार करें. मशहूर जलीलुल-कदर सहाबी जरीर बिन अब्दुल्लाह अलजबली رضي الله عنه से रिवायत है कि —

كنا نعد الاجتماع إلى أهل الميت وصنعة الطعام بعد الدفن من النياحة.

“मैयत को दफ़न करने के बाद मैयतवाले के यहां जमअ होने और खाना तैयार करने को हम नोछा करने में सुमार करते थे.” इससे इमाम अहमद ने ब-सनद हसन रिवायत किया है.

भुद अपने लिये या अपने मेहमानों के लिये खाना तैयार करने में हर्ज नहीं है. रिश्तेदारों और पड़ोसियों को मैयतवालों के लिये खाना तैयार करना याहिये, इस लिये कि नबी करीम ﷺ को हजरत ज़ा'इर बिन अबी तालिब رضي الله عنه की शाम में मौत की खबर पहुंची तो आप ﷺ ने घरवालों को हुकम दिया कि ज़ा'इर के घरवालों के लिये खाना तैयार करें, और कहा — **أنهم أتاهم ما يشغلهم.** — (इन्हें जो तकलीफ़ पहुंची है उसने इन्हें बेभुद कर दिया है.)

અલબત્તા, ઈસમેં કોઈ હર્જ નહીં કિ મૈયત કે ઘરવાલે અપને યહાં આએ હુએ ખાને મેં અપને પડોસિયોં કો શરીક કર લેં, ઓર હમારે ઈલ્મ કે મુતાબિક ઈસકે લિયે શરીઅત મેં વક્ત કી તેહદીદ નહીં હૈ.

૧૧. કિસી ઔરત કે લિયે મૈયત પર તીન દિન સે ઝ્યાદા સોગ મનાના જાઈઝ નહીં હૈ, અલબત્તા અપને શૌહર કે ઈન્તિકાલ પર ચાર મહિને દસ દિન સોગ મનાના ઝુરૂરી હૈ, લેકિન અગર ઔરત હામેલા હો તો ઉસકી ઈદત વિલાદત તક હોગી, જૈસા કિ નબી કરીમ ﷺ કી સહીહ હદીસ સે સાબિત હૈ. મગર મર્દ કે લિયે અપને કિસી રિશ્તેદાર વગૈરહ કે મરને પર સોગ મનાના જાઈઝ નહીં.

૧૨. મર્દોં કો એહલે કુબૂર કે લિયે દુઆ કરને ઔર ઉનકે લિયે રહમત કી દરખાસ્ત કરને ઔર મૌત ઔર ઉસકે બાદ કે અહવાલ કો યાદ કરને કે લિયે વક્તન-ફ-વક્તન્ કબ્રસ્તાન જાના ચાહિયે. નબી કરીમ ﷺ કા ઈરશાદ હૈ —

زوروا القبور فأنها تذكركم الآخرة.

“કબ્ર કી ઝ્યારત કરો, ઈસ લિયે કિ વહ આખિરત કી યાદ દિલાતી હૈ.”

ઈસ હદીસ કો ઈમામ મુસ્લિમ ને અપની સહીહ મેં રિવાયત કિયા હૈ.

નબી કરીમ ﷺ અપને સહાબા કિરામ رضીલ્લેહુમ્ અલૈહિમ્ સલ્મ્ કો સિખાયા કરતે થે કિ જબ કબ્રસ્તાન જાઓ તો યહ કહો —

السلام عليكم اهل الديار من المؤمنين والمسلمين. وأنا أن شاء الله
بكم لاحقون، نسأل الله لنا ولكم العافية. ويرحم الله المستقدمين منا
والمستأخرين.

“અસ્સલામુ અલઈકુમ અહલુલ દયાર મિનલ મુ’મિનીન વલ મુસ્લિમીન. વઈન્ન ઈન્ શા અલ્લાહુ બિકુમ લા હિકૂન, નસ્-અલુલ્લાહ

લના વ-લકુમુલ આફ્રિયહ્, વ-યરહમુલ્લાહુલ મુસ્તકદિમીન મિન્ન વલ મુસ્તઅ્ષિરીન.”

“અય ઈસ દયાર કે મોમિનો ઓર મુસલમાનોં, તુમ પર સલામતી હો, ઓર હમ ભી ઈન્ શા અલ્લાહ તુમ સે મિલનેવાલે હૈં, હમ અલ્લાહ ત્આલા સે અપને લિયે ઓર તુમ્હારે લિયે આફ્રિયત ચાહતે હૈં, ઓર અલ્લાહ ત્આલા રહમત કા મુઆમલા કરે, જો હમ મેં સે આગે જા ચુકે હૈં ઓર જો બાદ મેં આનેવાલે હૈં ઉન સબ પર.”

ઔરતોં કે લિયે કબ્રસ્તાન જાના મનઅ હૈ, ઈસ લિયે કિ નબી કરીમ ﷺ ને કબ્રોં પર જાનેવાલી ઔરતોં પર લા'નત ફરમાઈ હૈ, ઓર ઈસ લિયે ભી કિ ઉનકે વહાં જાને મેં ફિત્ને કા અંદેશા હૈ, ઓર ઉનકે અંદર સબ્ર ભી કમ હોતા હૈ. ઈસ તરહ ઔરતોં કો જનાઝે કે પીછે કબ્રસ્તાન જાના ભી મનઅ હૈ, ઈસ લિયે કિ રસૂલુલ્લાહ ﷺ ને ઔરતોં કો ઈસસે ભી મનઅ ફરમાયા હૈ; અલબત્તા મૈયત પર મસ્જિદ યા ઈદગાહ મેં નમાઝે જનાઝા પઢના મઠોં ઓર ઔરતોં દોનોં કે લિયે જાઈઝ હૈ.

વ સલ્લલ્લાહુ વ સલ્લમ અલા નબિય્યિના મુહમ્મદ
વ આલિહિ વ સહબહ.



નિવેદન

અલ-હમ્દુલિલાહ, ઈસ્લામિક ઈન્ફર્મેશન સેન્ટર-ભૂજની સ્થાપના ૨૦૧૨ ના વર્ષમાં થઈ હતી. તેનો હેતુ અલ્લાહના દીનથી અજાણ લોકો સુધી ઈસ્લામનો સંદેશ પહોંચાડવાનો અને મુસ્લિમ સમાજમાં જાગૃતિ આણવાનો છે. આ હેતુસર સેન્ટર વિવિધ પ્રવૃત્તિઓ કરી રહ્યું છે. સંસ્થા દીનની દા'વત માટે જે કંઈ કરી રહી છે તેની માહિતી આપ-સૌ સુધી પુસ્તકોના માધ્યમથી પહોંચતી રહી છે. આપ-સૌએ સંસ્થાના કાર્યોમાં હંમેશા સક્રિય સહયોગ આપતા રહ્યા છો.

આપ જાણો છો કે દીનના તમામ વિભાગોમાં કામ કરવા માટે વિશેષ આયોજન અને નાણાકીય ભંડોળની જરૂર રહે છે. આ સંદર્ભમાં આપને તન-મન અને ધનથી સંસ્થાને સહકાર આપવાની નમ્ર અપીલ કરીએ છીએ.



— શાએકદર્દા —

ISLAMIC INFORMATION CENTRE

Near Noorani Hotel, Danda Bazar, BHUJ (Kutchh)

નૂરાની હોટલ કે પાસ, ડાંડા બજાર, ભૂજ (કચ્છ)

Mobile :(+91) 8401786172